ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

साम्प्रदायिक सौहार्द के परिप्रेक्ष्य में गॉधी दर्शन की सम्प्रेष्णिता

Communicability of Gandhian Philosophy in The Context of Communal Harmony

Paper Submission: 04/03/2021, Date of Acceptance: 18/03/2021, Date of Publication: 20/03/2021

प्रीति बाला तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग,
राजीव अकादमी फॉर
टैक्नोलोजी एण्ड मैनेजमैन्ट,
मथुरा, उ0प्र0, भारत

सारांश

महात्मा गॉधी कहते हैं – प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह दूसरे धर्म का सम्मान करे और गुप्त रूप से भी अन्य धर्मो की निन्दा न करे। देश में तेजी से गहराते साम्प्रदायिक विभाजन के संदर्भ में महात्मा गॉधी के चिंतन व विचारों को अहमियत और बढ़ जाती है। वह साम्प्रादायिक विभाजन के खिलाफ लगातार संघर्ष करते रहे, उन्होने कभी हार नहीं मानी। उनका सपना था स्वाधीन भारत में एकता, सद्भाव व सौहार्द।

गॉधी जी कहते थे कि हमारे समाज में एकता तभी कायम रह सकती है जब हम दूसरे समुदाय के लोगों के प्रति सम्मान व उदारता का भाव रखें। यह अच्छे लोकतंत्र के लिए आवश्यक है। जिस समाज में एक वर्ग का वर्चस्व स्थापित हो जाता है वह देश सच्चा लोकतान्त्रिक समाज नहीं बन सकता तथा ऐसा समाज अपने सुरक्षित भविष्य की आशा नहीं कर सकता, सामाजिक व साम्प्रादायिक एकता देश की सबसे बड़ी शक्ति है। विश्वकल्याण की भावना व मानवता को खड़ा करने के लिए साम्प्रादायिक सौहार्द का समाज में वर्चस्व होना चाहिए।

समाज व राज्यसत्ता के विभिन्न अंग अपने–अपने हित में कुछ न कुछ हलचल करते रहते हैं। समाज व देश में व्यवस्था के स्थान पर अव्यवस्था कायम न हो इसको रोकने के लिये गॉधीजी ने साम्प्रादायिक सौहार्द के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र व को दिशा देने की कोशिश की।

युगपुरूष महात्मा गॉधी ने अपने विचारों से न केवल भारत को आजादी दिलायी बल्कि समाज में अनेक सुधार किये। उनके विचार देश में आज भी प्रासंगिक हैं। गॉधी जी विचारक, चिंतक के साथ ही मानवता के प्रकाश स्तम्भ हैं। युगात्मा, युगदृष्टा और प्रेरणास्त्रोत हैं। उन्होने कहा – दुनिया में शान्ति व सद्भाव लाने के लिए यह आवश्यक है कि देश में विभिन्न धर्मो के प्रति साम्प्रादायिक सौहार्द होना चाहिए।

हमारे देश में आपसी भाईचारे की अनेक अच्छी परम्परायें रही हैं। महात्मा गॉधी विभिन्न धर्म की एकता व सद्भावना के प्रबल समर्थक थे, वे चाहते थे अन्याय व शोषण को समाप्त करने के लिए सर्व धर्म सम्मान, सत्य अहिंसा व प्रेम की अवस्थिति, भ्रातृभाव, अस्पृश्यता, विश्वबन्धुत्व का दिव्यदर्शन।

Mahatma Gandhi says - Every person should respect other religion and do not secretly condemn other religions. In the context of the rapidly deepening communal divide in the country, the thinking and thoughts of Mahatma Gandhi increase in importance. He continued to struggle against the communal divide, he never gave up. His dream was unity, harmony and harmony in independent India.Gandhiji used to say that unity in our society can be maintained only if we have respect and generosity towards the people of other communities. It is essential for good democracy. The society in which a class is established cannot become a true democratic society and such a society cannot hope for a secure future, Social and communal unity is the biggest strength of the country. In order to create the spirit of world welfare and humanity, communal harmony should be dominated in the society.Various parts of society and the state keep stirring something in their own interest. Gandhiji tried to give direction to the nation in the context of communal harmony in order to prevent the chaos in the place of the system in the society and the country. Mahatma Gandhi, the young man, not only gave India freedom from his ideas, but also made many reforms in the society. His views are still relevant in the country. Gandhiji is a thinker, a thinker as well as a beacon of humanity. Yugatma, Yugadushta and Inspiration are the sources.He said - In order to bring peace and harmony in the world, it is necessary that there should be communal harmony towards different religions in the country.There have been many good traditions of mutual brotherhood in our country. Mahatma Gandhi was a strong supporter of the unity and goodwill of various religions, he wanted to end all injustice and exploitation, respect for all religions, the position of true non-violence and love, the vision of fraternity, untouchability, cosmopolitanism.

मुख्य शब्द : साम्प्रादायिक सौहार्द, सर्वधर्म सम्भाव, भ्रातृभाव व विश्वबन्धुत्व।
Communal Harmony, Universal Religion, Fraternity and Cosmopolitanism.

प्रस्तावना

राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी का चिंतन आज समाज के लिए प्रासंगिक है। प्रस्तुत लेख यह दर्शाता है कि गॉधी जी के विचार विश्व पटल पर प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह संदेश देते हैं कि उनका किसी भी क्षेत्र का चिंतन सामाजिक आयाम हमारी देश की युवा पीढ़ी को संघर्ष से बचाने का मानवतावादी शिक्षा देगा। गॉधी जी के विचार किसी भी क्षेत्र में हो, उसे समझने के लिये कुछ पंक्तियॉ इस प्रकार हैं–

जब टूटता है वजूद का सिंहासन
डोलती हैं किशतियां
बदलती है तहजीब
करवट लेता है समय इतिहास में
एकाध नाम गॉधी जैसा होता है
जो जिन्दा रखता है हमें
आने वाली पीढ़ियों के लिये
कुछ बचाके रखने के लिये

महात्मा गॉधी उच्च कोटि के विचारक, आदर्शवादी सिद्धान्तों के प्रतिपादक, समाज सेवक तथा आध्यात्मिक सिद्धान्तों के प्रतिपादक थे। उनके विचारों ने विश्व को एक नवीन चेतना प्रदान की है। आज उनके विचार आधुनिक देश में प्रासंगिक हो रहे हैं।

गॉधीजी के मानवतावादी विचारों में साम्प्रदायिक सौहार्द, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक विचारधारा रूपी सौरमंडल में सूर्य की तरह केन्द्र बिन्दु हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख में यहां राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी जी के मानवतावादी चिंतन में साम्प्रदायिक सौहार्द विषय को लेकर यह लेख लिखा जा रहा है। इसमें अध्ययन का उद्देश्य यह है कि उन्होने जो मानवतावादी विचारों पर चिंतन किया है वह देश के हित में है। हम यह व्यक्त करना चाहते हैं कि गॉधी जी मानव अवधारणा तथा अनेक समस्त आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक विचारधारा रूपी व मंडल में सूर्य की तरह केन्द्र बिन्दु हैं। यदि हम गॉधी जी की अवधारणा को अंगीकार कर लें तो हमारे देश मानवतावादी सूत्रों से प्रासंगिक हो जायेगा।

साम्प्रदायिक सौहार्द के परिप्रेक्षेय में गॉधी दर्शन की सम्प्रेष्णिता

गॉधी जी कहते हैं कि यदि मेरे जीवनकाल में नहीं तो तेरी मृत्यु के बाद हिन्दु और मुसलमान, दोनों इसके साक्षी होंगे कि मैंने साम्प्रदायिक शांति की लालसा कभी नहीं छोड़ी थी।

मेरी लालसा है कि यदि आवश्यक हो तो, मैं अपने रक्त से हिन्दु और मुसलमानों के बीच संबंधों को दृढ़ कर सकूँ।

वे हिन्दुओं से जितना प्रेम करते थे, उतना ही मुसलमानों को भी करते थे। उनके हृदय में जो भाव हिन्दुओं के लिए उठते थे, वही मुसलमानों के लिए भी उठते थे।

यदि वे अपना हृदय चीरकर दिखा सकते तो आप पाते कि उसमें कोई अलग–अलग खाने नहीं हैं, एक हिन्दुओं के लिए, दूसरा मुसलमानों के लिए, तीसरा किसी और के लिए।

वे अपनी युवावस्था के आरम्भ में ही हिन्दू–मुस्लिम एकता के दीवाने रहे थे। कई उच्च कोटि के मुसलमान उनके अन्यतम मित्र थे। इस्लाम की एक भक्तिन उनकी पुत्री के समान थी। वह हिन्दु–मुस्लिम एकता के लिए जीती थीं। बंबई की जामा मस्जिद के मुअज्जन का बेटा उनके आश्रम का पक्का संवासी रहा था।

गॉधीजी कहते हैं– हिन्दू–मुस्लिम एकता का अर्थ यह है कि हमारा समान प्रयोजन हो, समान ध्येय हो, और समान गम हों। हम एक दूसरे के गम में साझी होकर और परस्पर सहिष्णुता की भावना रखकर एक–दूसरे के साथ सहयोग करते हुए अपने सामान्य लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे तो यह हिन्दु–मुस्लिम एकता की दिशा में सबसे मजबूत कदम होगा।

हिन्दु–मुस्लिम एकता का अर्थ केवल हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता नहीं है, बल्कि उन सब लोगों के बीच एकता है जो भारत को अपना घर समझते हैं, उनका धर्म चाहे जो हो।

हमारी मैत्री का आधार प्रेम है, जो धर्म का भी आधार है। मैं प्रेम के अधिकार के बल पर मुसलमानों से मैत्री चाहता हूँ। यदि एक संप्रदाय भी प्रेम पर आरूढ़ रहे तो हमारे राष्ट्रीय जीवन में एकता की समस्या कभी पैदा नहीं होगी।

सर्वोत्तम उपाय विश्व–मैत्री है जिसका अर्थ है, समस्त मानवों को अपने परिवार के सदस्य मानना। जो व्यक्ति अपने परिवार और दूसरे परिवार के सदस्यों के बीच भेद करता है, वह अपने ही परिवार के सदस्यों की कुशिक्षा का दोषी है और मनमुटाव तथा अधर्म का मार्ग प्रशस्त करता है।

साम्प्रदायिक अव्यवस्था एक बहुमुखी राक्षस है। यह उसके लिए जिम्मेदार लोगों सहित अंततः सभी को क्षति पहुँचाता है।

यदि एक पक्ष अपनी जबाबी कार्यवाही बंद कर दे तो उपद्रव जारी नहीं रह सकता।

गलत काम करने वाले व्यक्ति के सहधर्मियों या रिश्तेदारों से बदला लेना कायरतापूर्ण कृत्य है।

इस्लाम में और हिन्दू धर्म में ऐसे लोग पैदा होने चाहिए जिनका चरित्र अपेक्षतया निर्मल हो और जो गुंडो के बीच जाकर काम करें।

हम गुंडों का हृदय–परिवर्तन करेंगे और उन्हें नियंत्रित करेंगे।

किसी भी अच्छे धर्म में, चाहे वह इस्लाम हो, हिन्दू या कोई और हो, गुंडागर्दी के लिए कोई स्थान नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे धर्म का आदर करना चाहिए और उसके अपकार की बात मन में भी नहीं लानी चाहिए।

ऐसे किसी भी प्रचार की अनुमति नहीं दी जा सकती जो दूसरे धर्मों की निंदा करता हो।

एक–दूसरे के धर्म की निंदा करना, गैर–जिम्मेदाराना व्यक्तव्य देना, झूठ बोलना, निर्दोष लोगों

के सिर फोड़ना, मंदिरों या मस्जिदों को अपवित्र करना भगवान को नकारना है।

साम्प्रदायिक समस्या के समाधान की कुंजी यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म की सर्वोत्कृष्ट बातों को माने और अन्य धर्मो तथा उनके मानने वालों को उतना ही सम्मान दें।

प्राचीन संस्कृति के गूढ़ कोषों की खोज का प्रयास करते हुए मुझे यह अमूल्य रत्न हाथ लगा है कि प्राचीन हिन्दू संस्कृति के सनातन तत्व ईसा, बुद्ध, मुहम्मद और जरदुश्त के उपदेशों में भी मौजूद हैं।

हिन्दू धर्म ने विश्व के सभी धर्मो की उत्कृष्ट बातें आत्मसात की हैं और इस अर्थ में यह कोई एकांतिक धर्म नहीं है। इसलिए इसका इस्लाम या उसके अनुयाइयों के साथ कोई झगड़ा नहीं हो सकता है।

तलवार इस्लाम की तलवार नहीं है। लेकिन इस्लाम ऐसे पर्यावरण में पैदा हुआ जहॉ तलवार सर्वोपरि कानून थी, और आज भी है..... तलवार का अब भी मुसलमानों में बड़ा जोर है। यदि इस्लाम अपने शब्दार्थ यानी ''शांति'' के अनुरूप सिद्ध होना चाहता है तो उसे तलवार को म्यान में रख देना चाहिए।

इस्लाम का विशेष योगदान है..... ईश्वर में एकत्त्व में उसका दृढ़ विश्वास और अपने अनुयाईयों के बीच भाईचारे की सच्चाई की व्यवहारिक प्रयुक्ति।

'इस्लाम' शब्द का अर्थ है 'शांति'। शांति केवल मुसलमानों तक सीमित नहीं रखीं जा सकती है। उसका अर्थ सम्पूर्ण विश्व की शांति होना चाहिए।

एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म को अंगीकार करने और प्रतिस्पर्धी धर्मो का खंडन करने से ही परस्पर घृणा की भावना पैदा होती है।

कुरान में ऐसा कुछ नहीं है जो धर्मपरिवर्तन के लिए बलप्रयोग का समर्थन करता हो।

जिस प्रकार हम नागरिक समस्याओं को लेकर एक–दूसरे का सिर नहीं फोड़ते उसी प्रकार हमें धार्मिक मामलों में भी यह नहीं करना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि अगर नेतागण लड़ने पर उतारू न हों तो आम जनता लड़ना नहीं चाहेगी। इसलिए अगर नेता इस बात के लिए तैयार हो जाऍ कि अन्य उन्नत देशों की तरह वे भी अपने आपसी झगड़ों को बर्बर और अधार्मिक मानकर सार्वजनिक जीवन से मिटा देंगे तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि आम जनता चुपचाप उनका अनुगमन करेगी।

बीच–बचाव ओर मध्यस्थता ऐसी पद्धति है जो जमाने से चली आ रही है और यह एक सभ्य पद्धति है।

परस्पर सहिष्णुता सभी कालों और सभी प्रजातियों के लिए एक आवश्यक गुण है।

ईमानदार लोकमत व्यक्ति पक्षों के कानून अपने हाथों में नहीं लेने देता ओर हर विवादास्प्रद मामला या तो किसी आपसी मध्यस्थ को सौंप दिया जाना चाहिए या कानूनी अदालतों कों.....

जहॉ हिन्दू इस प्रथा का जान–बूझकर पालन करते आ रहे हैं कि वे मस्जिदों के बाजा बंद कर देते हैं, वहॉ उन्हें इस प्रथा को तोड़ना नहीं चाहिए। लेकिन जहॉ वे बिना रोकटोक बाजा जारी रखते आ रहे हैं वहॉ यह प्रथा जारी रहनी चाहिए। जहॉ झगड़े का अंदेशा है या तथ्यों पर मतभेद हैं वहॉ यहॉ दोनों को मामला मध्यस्थ के सुपुर्द कर देना चाहिए।

गौरक्षा हिन्दुओं का धर्म है, लेकिन अहिन्दू के विरूद्ध बल–प्रयोग करके गाय की रक्षा करना उसका धर्म कदापि नहीं हो सकता।

हिन्दू बहुसंख्यकों के लिए यह अ–बुद्धिमत्तापूर्ण.... और अनुचित होगा, कि वे अल्पसंख्यक मुसलमानों पर, गौहत्या के कानूनन निषेध को मानने के लिए बल का प्रयोग करें।

हिन्दूओं और मुसलमानों द्वारा हिन्दी और उर्दू लिपियों को अपनाने की मेरी सलाह एकात्मक पद्धति पर आधारित है।

यदि हम सरकारी विभागों में साम्प्रदायिक भावना फैलाएंगे तो यह सुशासन के लिए घातक होगा।

अल्पसंख्यक पूरा–पूरा न्याय पाने के हकदार है। कुशलता और योग्यता ही एकमात्र कसौटी होनी चाहिए।

जिस एकता की हमें कामना है, वह तभी बनी रह सकती है जब हम एक–दूसरे के प्रति लचीली और उदार मनोवृति का विकास करें।

सहिष्णुता ही वह चीज है जो भिन्न–भिन्न धर्मो को अनुयाइयों को अच्छे पड़ौसियों और मित्रों के रूप में रहने में मदद करेगी।

संप्रदायवाद से राष्ट्रवाद बड़ा है। इस अर्थ में हम पहले भारतीय है और उसके बाद हिन्दू, मुसलमान, पारसी और ईसाई हैं।

राज्य के लिए पूरी तरह पंथनिरपेक्ष होना अनिवार्य है.... तद्नुसार, कानून की नजरों में सभी लोग बराबर होंगे। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी रोकटोक के अपने धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र होगा, बशर्ते कि वह सामान्य विधि का अतिक्रमण न करें।

अल्पसंख्यकों को इस बा तकी प्रतीति कराई जानी चाहिए कि जिस राज्य में वे रहते हैं, उसके वे उतने ही मूल्यवान नागरिक हैं जितने कि बहुसंख्यक वर्ग के लोग हैं।

अगर बहुसंख्यक हिन्दू अपने धर्म और कर्तव्य को बहुमूल्य समझते हैं तो वह हर कीमत पर न्यायोचित व्यवहार करेंगे। वे अल्पसंख्यकों की कमियों या त्रुटियों पर ध्यान नहीं देंगे, क्योंकि अल्पसंख्यक न्याय पाने के लिए केवल उन्हीं पर अवलंबित हैं।

आपको मुसलमानों को समकक्ष नागरिक मानना चाहिए। बराबरी के व्यवहार का तकाजा है कि उर्दू लिपि को आदर की दृष्टि से देखा जाए।

अल्पसंख्यक वर्ग कितना भी छोटा हो, उसे यह अनुभव नहीं होना चाहिए कि उसका दमन किया जा रहा है। भाषा, लिपि आदि के प्रश्नों को बड़ी नरमाई से सुलझाना चाहिए।

हिन्दू–मुसलमान के मसले पर मेरा एकमात्र ध्येय यह है कि इसका पूर्ण समाधान तभी होगा जब भारत या पाकिस्तान में रहने वाले अल्पसंख्यक अपने को पूरी तरह सुरक्षित अनुभव करेंगे, चाहे वह संख्या में एक ही रह जाए।

हिंदू और सिख स्त्रियों को मुसलमान बहनों के पास जाकर उनसे मित्रता स्थापित करनी चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे मुसलमान बहनों को त्यौहार और उत्सवों पर निमंत्रित करें और इसी प्रकार मुसलमान बहनें उन्हें निमंत्रित करें। मुसलमान लड़कियों और लड़कों को सांप्रदायिक विद्यालयों की बजाए सामान्य विद्यालयों में प्रवेश लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। उन्हें खेलकूद में मिल–जुलकर भाग लेना चाहिए।

इस नवी सदी में गॉधीजी के दर्शन की नयी परिभाषा की आवश्यकता है। आज प्रश्न यह भी उठाया जा रहा है कि क्या गॉधीजी के दर्शन की इस नयी सदी के बदलते हुए परिदृश्य में उतनी ही प्रासंगिकता है, जितनी पहले थी?

आज इस ग्लोबल संसार के सामने जो विश्व स्तरीय चुनौतियॉ हैं, उन्हें देखते हुए गॉधी दर्शन आज भी उतना ही स्वीकार्य है जितना पहले था, शायद उससे भी कहीं ज्यादा।

आज गॉधीवादी दर्शन पूरे विश्व को एक नया दिशा–बोध दे रहा है। गॉधी दर्शन की एक नई व्याख्या हमारे सामने है। आतंक, बिखराव और दहशत से जूझते हुए इस विश्व को इन दिनों में गॉधी दर्शन और उनका अहिंसा का प्रयोग–सूत्र ही एक मात्र चिराग है, जो इस विश्व को एक नया रास्ता दिखा सकता है।

गॉधी दर्शन के इस प्रासंगिकता को दर्शाते हुए लेखक जनार्दन, द्विवेदी का मानना है कि – पिचहत्तर साल पहले आधुनिक विश्व के दो असाधारण पुरूषों ने अपने–अपने देश में जनक्रांति का नेतृत्व किया। दोनों ही के अपने अलग–अलग विचार थे और वे अपने देश व विश्व को एक नये रास्ते पर ले जाना चाहते थे, जहॉ सभी प्रकार के शोषण और दमन से मुक्ति हो, हालांकि उनके लक्ष्य कमोवेश एवं समान थे, लेकिन उन्हें प्राप्त करने का रास्ता और तरीका बिल्कुल भिन्न था। वे दोनों आत्म बलिदान और सादगी की प्रतिमूर्ति थे। वे दो महापुरूष थे– महात्मा गॉधी और बी0आई0लेनिन।

भारत के सुदूरवर्ती जिले चम्पारन में महात्मा गॉधी ने 1917 में अपना पहला सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया, जिसके बारे में उन्हें कुछ ज्ञान नहीं था, जब गॉधी जी चम्पारन में पधारे।

निष्कर्ष

प्रस्तुत लेख अनुसंधान की दृष्टि से मेंरा मन्तव्य है कि गॉधीजी के विश्व पटल पर सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक विचार भारतीय दर्शन के लिये व अधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता व आवश्यकता एवं महत्व को दृष्टिगत किया गया है। उन्होने समाज में आपसी सद्भाव, बौद्धिक समाज द्वारा उसकी वैचारिक ग्राहयता को सहन बनाने का प्रयास किया है।

गॉधी जी ने सर्वोदय समाज की कल्पना की थी। गॉधीजी ऐसे आदर्श समाज का निर्माण करना चाहते थे। वह एक ऐसा हथियार, ऐसी पद्धति विश्व मानव को प्रदान की जिसके सहारे आदर्श समाज का निर्माण सम्भव हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गॉधी विचार दर्शन – रामजी सिंह मानक*
2. *गॉधी दर्शन मांमांसा – प्रकाश नारायण नारायणी*
3. *2000 पोइन्टर पब्लिशनर्स – जयपुर*
4. *गॉधी चिंतन आधुनिक परिप्रेक्ष्य – प्रतिभा जैन हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1989*
5. *गॉधी विचार दोहन – किशोरलाल मशरूवाला नई दिल्ली–1957*
6. *गॉधी की प्रासंगिकता – जयदेव सेठी राधाकृष्ण प्रकाशन–1979*
7. *गॉधी नवसृजन की अनिवार्यता – काका साहेब कालेलकर साहित्य प्रकाशन दिल्ली*
8. *आधुनिक युग में गॉधी विचार – गॉधी शतवार्षिकी समिति*

समाचार पत्र

1. *नव भारत टाइम्स*
2. *अमर उजाला*